…सवार न छुह ज्ञानी। न छुह आलम न छुह दनी।
…मूरर्त न अनजनी। तवै पोप मोत न्य ननी।
…पम "सपी" संज अरव आपू। सत गुरु संज मेहर नानी॥

भक्ति पोश नं. ७

"सर्व मंगला"

लेखकः-
श्री शायी सुधाकर वली
रातू श्रीनगर

—·—

प्रिन्टर - पबलिशर
श्री मखन भट आनन्द नागी

मूल्यः ४० पै.

…बार १०००

(सर्वाधिकार सुरक्षित है)

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

भजन नं० ५०

आदिदेव बोज़ ज़ार पार   कास अन्धाकार लो लो।
बोज़तम विल तै ज़ार   कास अन्धाकार लो लो॥
प्रज़लान चोन दरबार   गणपत यार लो लो।
प्रोजायमान भूमिदार   कास॥०॥
मूषकस प्यठ असवार   हरुय आहार लो लो।
गज़ मुख मूलादार   कास॥०॥
[illegible]र दित आसि नार   विघ्न हरतार लो लो।
[illegible]लाव नरकानि नार   कास॥०॥
हुस व स्यठाह लाचार   कर उपकार लो लो।
बाल तम पापन्य बार   कास॥०॥
गुरु-पथ ध्यान चोन दार   शुभ व्यवहार लो लो।
जप यज्ञ स्वाहाकार   कास॥०॥
फेरान हरि संसार   नगेन्द्र हार लो लो।
जगतकि पालन हार   कास॥०॥
सिद्धि दाता सरकार   त्रिभुवन सार लो लो।
कारस दिवान व्यसतार   कास॥०॥
एक दन्त रूप ओंकार   कर स्योन चार लो लो।
मुकलाव खुटि संसार   कास॥०॥
[illegible]धिमुत आव दरबार   वनने ज़ार लो लो।
[illegible] धी" ह्यथ सर निसार   कास अन्धाकार लो लो॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

भजन नं० ५।

दर्शन च्याने पंपोष फुलै वलै मजी सोन।
हावतम ज़ंव बुन मुख रूबलै वलै मजी सोन॥
कुल मुल्य आसन चोन नागदलै नपान सूर्य त जून।
सुन सुन्द सिंहासन जरिथ मोरछलै॥ वलै॥
नागह शोभान छुय गंगज़लै रंग रंग खुश्ब दुबोन।
अजर अमर छ्यवव निषाकलै॥ वलै०॥
ब्रोह कन्य ज़गतचि छै मिसलै भक्तयन हन्ज़ क्योनक्योन।
चिय छ्यवव करान सानि मुश्किल हलै॥ वलै०॥
बतिं छुस आसुन पादन तलै बननै लाल पनुन।
ह्यै रूस इ मन म्योन छुय चज़वलै॥ वलै०॥
क्या छुम लीरिवय म्य अज़लै बुछतम आमै लोन।
कासतम नज़रा चल्यं ज़ह ज़लै॥ वलै०॥
दनि २ मा बो पूजीन मनि गलै दरि २ वुत्त न्यथ चोन।
अथ रट करतम न त छुस नलै॥ वलै०॥
काम क्रोध लोभ निष्प मावतम वलै हावतम सुख अस बोन।
पावतम संतुष्ट कास गांगलै॥ वलै०॥
बुद्ध बै मारि कांह शुर बे कलै आलि छुय मालि जुन्द बोन।
टोठ छुय बालान छुस अकलै॥ वलै०॥
बतियुक्ते आस नालिलै तोति छुस शंसान चोन।
आरि मालि जुवन कर मालि वलै॥ वलै०॥
कुंयतै बो फुर तानि बो लै जाम वलै रंव बोन।
...॥ वलै०॥
पादि ब्राह्मण बो आशि ... सायो हाथ शाक बोन।
पोषि मुन आवा न छुय ... वलै मजी सोन॥
सोज़तम दयि धन पननै रवलै।

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

भजन नं॰ ५२ (वाक्य)

सत गव सदा शिव सत वतीव जीव।
सतस सूत्य पव ज़नी जान।
असत ज़ालुन ज्ञानकि टीपै।
कामक्रोध लूबस करजीव फानू॥

सतचि वथ गयि न परन्य गीता कर-फर।
इय पठ्य परान तोत पंजरस अन्दर।
सतचि वथ गयि न ऽ्यकस लागुन्यकेर
छ़ल त कपठ थावुन मनस अन्दर॥

सतचि वथ गयि परन्य गीता करन्य अमल।
सत वर्तावुन करुन दान पुन।
सतचि वथ गयि सुल्य उथु प्रभातन
छलुन मुह मल ज्ञान यारल लै॥

भजन नं॰ ५३

ह्री जगत माता जगतचि रनी।
सुख हाव कर मेहरबनी ये।
कासतम संकट वासतम सानी।
सुख हाल कर मेहरबानी ये॥

छुसव ने कस दिम परिज़नी।
वुछ़ हथ तोरि सामनिये।
बसिहेम दुःख संकट नै हानी॥०॥

जरी थावतम अमृत वनी।
परह लोल गीत चनिये।
[illegible] दम हावे कर्स्य [illegible]॥०॥

CC-0. Narinder Saraya Collection. Digitized by eGangotri

भोस तम ज़री काहतम हानी।
आशा यन्न छम चानीये।
व्य हिव कर वन कुए मय ज़नी
सुदैवे आरि कांह सुर मनज़नी।
मज़्य तस ह्यछनावनीये।
अथ दरियाव छुस वथ हावनी॥०॥
वति युद आस नेकर वेज़नी।
तोति छम आशा चनीये।
छुस चोन संतान छख मज़ मय
ख्रन्य छख वालस व्यठ लोबनी।
परबत किलस शोभ चनीये।
तुल्य मुल्य नागस मंज़ आय चनी॥०॥
शारिकाय रूपै मत्र बगरनी।
राज्ञाय रूप रख्यावनीये।
दुर्गाय रूप दुर्गत कासनी॥०॥
लछमी रूप छख धन रवज़नी।
ज़ाला हाल वोज़नीये।
कालि काइ रूप काल भय नाशनी॥०॥
जगतस हरिक्रय छख फेरनी।
लोट तै माय बगरनीये।
प्राह तै गथा छुय कुन बासनी॥०
"रुपी" छय आव पोषमस तनी।
कन पत भोग तस वनीये।
नज़रे कान्य सुता बन्यस शादमनी॥ मुख०॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

भजन नं॰ ५४

खुर ननवारे च्यङ् कुन डुवये।
माता बोज़तम रुवये लो।
चानि प्रकाशॖ ज़गि नूर च्यवये।
माता बोज़तम रुवये लो॥०॥

वुनि क्या तस वंन तून क्या ज़ारस।
छुवे क्या, क्या थव संच्याय द्वारस।
यम्य न जांह् ब्योल वुवये लो॥०॥

तस कुस कारि गज़स निशि श्रयरूट।
यति कह वचि ब्यठ रवसि पास तै खुट।
युस न जांह् तीर्थस गुवये लो॥०॥

संतुष्ट रोज़ान तस मन प्राणह्।
होल सान युस बोज़ान शिव ज्ञानह्।
ज़ान तथि सूत्य यमि थवये लो॥०॥

यम्य ज़ोन पानस मंज दॖयिमन्दिर।
तथि मंज ज़ोनुन श्री प्राण सुन्दर।
स्य चोंग श्वद तस छुवये लो॥०॥

दीवीत देवता छिय तस टोठान।
यम्य ज़न कजि श्रद्धाय त होलसान।
दद धन संच्यथ छुवये लो॥०॥

फालव यम्य युस होल दुकानस।
यम्यि कति दिय क्याह् धर्मस त दानस।
यम्य न ज़ांह् मानस रछ्यवये लो॥०॥

तस आसि जाया वैकुंठस्य मंज।
ज्यन वोंह् यम्य मन कर सरलकसंज़।
दस ज़ानि दास दास छुवये लो॥०॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

लोल हुत पोशिमुत छुक प्रथ प्रती।
"सथी'ह्यथ आव करने जारी।
परने लोल गीत लुवथ्ये लो।
माता बोज़तम रुवथ्ये लो॥०॥

× × × × ×

भजन नं. ५५

म्य हाव सुरत कर मेहरबनी।
च घ्यरव ज़गतच्य महारनी।
वन्दै जुव जान पादनी।
स घ्यरव ज़गतच्य महारनी॥०॥

व आसुत छुस प्रारण माता।
च दिम दर्शुन म्य आरव साथा।
करुम पूर्ण मनाचि वनी॥०॥

च्य निशि सुस लोलशेत जांह आव।
मतुन अडाय मान चोन नाव।
तमिस ... सथ्य मनाचि हानी॥०॥

आछिन सुस लोल ओश ग्राव।
तमी सूत्य पाद चान्य नाव।
तमिस घ्यरव न्याद कासनी॥०॥

च्य छुय वन भवनन हुन्द राज्य।
कलस च्यठ मुकत जरियह ताज।
सिंहासन चोन चूरनी॥०॥

...सुत मानी म्य मुकलावतम।
नितम पानस निशि ...

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

जनावतम मजुन ऊँडवनी॥०॥

व छुस मसूम युर बेकल
च़ रोज़तम मूत्य मूत्य बिल्कुल।
छुसै च्य रोज़त व रवोचनी॥०॥

म्य युटवै जांह मशि फरियाद
च़ दीज्यं नाद कडिज्यं याद।
व चोन संतान च़ मज्य म्यनी॥

व "रघी" हाय करान ज़ारी।
करुम अथरुट चल्यं खरी।
वन्यं भक्ति नजरि श्यादमनी॥०॥

व छुस मूर्ख त अनज़नी।
तवै पोशहुन म्य वननी।
करुम अनुग्रह चल्यं ह्नी॥०॥
च़ छयख ज़गतच्य महारनी॥

※ ※ ※

भजन नं. ५६

(तर्ज़ :- ग्रिश रंग)

दशुन दिखना छयम शादन तै।
मीठ्य व दिमै पादन।
कनथव म्यान्यन फर्यादन तै।
मीठ्य व दिमै पादन॥

सुर आव सुह गव अथ हावनै
यति न कांह रोज़ान।
कमन शाहन शाहज़ादन तै

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

यम नो छुय नावन्।
यम्य कर होरसान अराधन तै।
विधि विधि सुव श्रामन्।
नत छुव कन तम्य होरनादन तै।
गन पापन तस छयन्॥०॥
वन्य म्यदितिमै कोह लाल्न तै।
वन वन छाहर् गामन्।
हन्य हन्य छोरुम मदु नारन तै।
वोज़ुम सु छु ला मकन्।
लछकछ्य तमिसूय नाव छ्रोमन तै।
लछ जोव तमिसूय वनन्।
पछि पछि कर तमि सुन्द कीर्तन तै।
दिल जानो तन मन्॥
दर्शुन दिरवना छयम लादन तै॥
युत दुय जन्मस क्याह प्रावन तै
अरवर सूर गछन्।
ज़ान यव तसि सूत्य सुन श्रामन तै।
सुय छुँद् सोरुय धन्।
सु छुय सीता राम लक्ष्मण तै।
तसि विष्णो छि वनन्।
ब्रह्मा महेश्वर सुय आसन तै।
सुय छुय नारायण।
दर्शुन दिरवना छयम लादन तै॥
राधा तथै श्रम [illegible] तै।
शारिकाय रूप रच्यावन्।

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

दुर्गाय रूप दुर्गत कासन नै।
लक्ष्मी धन सोजनू।
यम्य तोर तन मन लोल इमन नै।
सूय भक्ती प्रावनू।
भवसर सूय सुय तार लवन नै।
वैकुण्ठ सुय छावनू॥
दर्शुन दिखना छ्यम लादन नै॥

हा जीव कथ क्युत छुख हुंबरन नै।
कथ ष्यठ छुय मन भ्रमनू।
क्याह छुय कास्तन हारन ध्यारन नै।
हरि जाई गुरि गुमननू।
दइ धन सुस छुइ हुंबरावन नै।
तसि सन सुख भासनू।
वातान तस छुय सुय रादन नै।
अज्ञान छुस कासनू॥
दर्शुन दिखना छ्यम लादन नै॥

भक्ती कुच्य कर हनूमानन नै।
सूत्य सूत्य रूटुस भगवनू।
सीन मंज कुड़ैन राम लक्ष्मण नै।
टोठ्योस नारायणु।
तिथै पाठिन लोल भगथन नै।
सय कर अपराधनू।
विह ज़ार वनियो मत्य पोषान नै
CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri
सथ्यो य" पवतम कनू।
दर्शुन दिखना छ्यम लादन नै॥

भजन नं. ५७

दिल बे करार छुस,
उलफतुक बार छुस,
होल छुस वाल कृष्णा,
होलुक नार छुस,
टुटसुन बहार छुम,
दज़बुन नार छुम,
कर त्र इरव श्याम सुन्द्रा,
चोन इन्तिज़ार छुम,
प्राणन रोज़स रती रातस,
रोज़म आश्रा चनी-हो-
रोज़म आश्रा चनी,
अश्रा म्य वसान जुय अछव किन्य,
गोमो दरिया जरी-,
गोम दरिया जरी,
दिल बे करार छुम॥०॥

जंगल छांडिम कोह बिया बान,
बाज़र छारिम सरी-हो-,
बाज़र छारिम सरी,
यदि लोहस पाद कलिम,
जुव म्य गोमो नरी;
जुव म्य गोमो नरी,
दिल बे करार छुम॥०॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

केतान सरिसूय छुरव च नन्य पठ्य,
नेरान छुरव त्रुपरी - हो -;
नेरान छुरव त्रुपरी,
दर्शुन दिरवना म्यो लटे,
तुलरव म्य कुन टरी,
तुलरव म्य कुन टरी,
दिल वे करार छुम ॥०॥

छुम म्य अभिलाषा बुछ्य करवो,
चल्यं दिलच रवरी - हो -;
चल्यं दिलच रवरी,
आरान छि अरि च्यानी मारे,
हरिय विहिय सारी -;
हरिय विहिय सारी,
दिल वे करार छुम ॥०॥

लबय कते कथ प्राय क्योछुरव,
ही कृष्ण मुरारी - हो -,
ही कृष्ण मुरारी,
अस्तिनै जै - जै कार अरि छिय,
भक्त जनी सारी;
भक्त जनी सारी,
दिल वे करार छुम ॥०॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

धारान "सफी" छिय तोठ पोष्रालय,
लागोय चरी-चरी-हो;
लागोय चरी-चरी,
दर्पुन दिखना पोष्रौमतिस्रय,
बोज़तम विलौ ज़री-,
बोज़तम विलौ ज़री,
दिल बे करार छुम॥०॥

भजन नं ५८

कारिमै ज़री यारी रातस।
आदि प्रभातस तान्य।
क्या कुना डूरव ना अकिस सातस।
आदि प्रभातस तान्य॥

छुम ना सोर कांह बोड बंध यारड।
जारदू कुस बोजि म्यान्य।
च्युरुस कस वन मिचस आतस॥०॥

कुस बो मे कर कारत यरी।
ज़री थवतम कनू।
होठतम विष्रानार्पन म्य सनाप्यस॥०॥

छिम म्य गमति जिगरम-अली।
जली पंजकय पठय।
प्रावक म्यान्य कुस तन्य तस नाक जातस॥०॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

कति ब छांडन् कति ब गारण।
नारन नैयन मंज।
कथ् शाय ब्योडुम कुनुनस् वातस॥०॥

महादेव वातस गंगाबल रा
शारस हर मुखे।
हरिश्वर छा किन अमर नाथ

उमा पति शिव शंकर रूद्र।
जरसूय चूनि जामन।
वृषभा वाहन बोल नाथस॥०॥

नाबुस परन आकाशुक काश
आशा छयम चनी
करतं नज़रा अज़रस जातस

अमृत वर्शुन दर्शन दितम्।
नितम पानस कुन्।
शूति शूति रोज़तम सातस सातस॥०॥

इखना साथा साथी म्याने।
साथा म्यह साने।
बाथा कर सूत्य पोषा करनाथ
आदि प्रभातस् तान्य॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

भजन नं. ५९

मज्य नाङ्गाय अरि मै रोपू।
लोल पोश्च ब अनै ऊ़ल्यै लो

माज्य छा आसान पे ताह बोश।
लोल पोशु ब अनै ऊ़ल्यै लो॥

युस आव लोल सान व्यै निशु ज़ारस
द्रावनै अति जांह खलीयै लो॥०॥

नागस मंज छुय हुन सुंद मन्दिर
तथि अन्दर छख पोशमलियै लो॥०॥

बोज़ान छख हुरन दद्य आरव तस'
युस ह्युय भाव सालीयै लो॥०॥

अष्टा दश भुज़ छख अन्न बगरान।
कांह नै छहन यवान खलियै लो॥०॥

जगतस फेरान छयख सह सवारी।
इरवना शेन जांह कालियै लो॥०॥

छरि अथ आसुत छुस करनि जरी।
छुम क्याह तीं अनै ऊलियै लो॥०॥

आश छम चनी अन कारां निराशु।
नज़रा करतम ह्रलियै लो॥०॥

प्राराण पोशमुत छुय 'सपी' लगा।
वुरि पोश लागै मरबमालियै लो।
लोल पोश्च ब अनै ऊलियै लो॥

इति भक्ति पोश नम्बर ७ (एर्च मंगाइश) समाप्त॥

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri

श्री 'साथी' सुधाकर वली के लेख :-

भक्ति पोष्पा नम्बर १ कृष्ण भजन,
" " २ कृष्ण जन्म,
" " ३ प्यारे नूर,
" " ४ जगदम्बा,
" " ५ सूर सुत,
" " ६ गिर धर,
" " ७ ईव मंगला,
" " ८ मुर्ली मनोहर, शीघ्र ही

आप के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। जिस में श्री भगवान कृष्ण के गुण वर्णन तथा भजन आदि से गुठित हैं।

मुद्रक तथा प्रकाशक :-

श्री मखन भट्ट अनन्तनागी ने, श्री "साथी" सुधाकर वली के आज्ञानुसार, हर मुहल्ला, अनन्त नाग काश्मीर से प्रकाशित की॥

मिलने का पता :-

१. श्री राज नाथ दुकान्दार, मट्टन,
२. श्री सोम नाथ दुकान्दार, अनन्तनाग,
३. गौरी शंकर मन्दिर रघू बाला श्रीनगर।

CC-0. Narinder Safaya Collection. Digitized by eGangotri